International Research Journal of Human Resource and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor 7.924 Volume 11, Issue 03, March 2024
Website- www.aarf.asia, **Email** : editoraarf@gmail.com

रामायण में नारी की सामाजिक स्थिति

डॉ. नेहा गौड़
पोस्ट डॉक्टरल अध्येता
18nehagaur@gmail.com

सारांश :– आज भी समाज एवं परिवार की धुरी नारी है, जिसकी उपस्थिति जीवन में आनन्द का प्रसार करती है। रामायण भी नारी के इस रूप का सम्मान करता है। प्रस्तुत शोध रामायण कालीन नारी की सामाजिक स्थिति की विवेचना है, जहाँ नारी शिक्षा, नारी के संस्कार, समाज का दायित्व समाज के प्रति नारी दायित्वों की चर्चा होगी। तत्कालीन समय में स्त्री की जो उपयोगिता थी, वह आज भी सम्मानीय है। समाज में जो नारी को सम्मान मिला, वह उसकी साधना, सत्यता, सहनशीलता, सौम्यता आदि सद्गुणों का ही सुफल है।

मूल शब्द :– सामाजिक, परिवार, नारी संस्कार, दायित्व, शिक्षा, सहभागिता।

सामाजिक जीवन की आधारभूत इकाई है–परिवार। उस परिवार का धरी नारी को माना गया है! इसी से प्रेरित होकर मनु ने कहा – 'गृहिणी गृहम उच्यते'। परिवार, संस्कार शिक्षण के लिए सुन्दर पाठशाला है, जिसकी आचार्य गृहिणी होती हैं। परिवार आतुरालय है, जिसकी प्रधान चिकित्सक गृहिणी होती हैं। परिवार धर्मशाला है, जिसमें धर्माधर्म का निर्णय गृहिणी करती हैं। परिवार श्रम केन्द्र है, उसके सदस्यों के लिए श्रम का निर्धारण गृहिणी करती हैं। परिवार आनन्द निकेतन है, जिसमें विविध प्रकार के मनोरंजन की व्यवस्था गृहिणी करती हैं। परिवार प्रशिक्षण शाला है, जिसमें जीने की कला गृहिणी सिखाती है।

गृहिणी को महिला कहा जाता है – महिला महस्य इला इनि अथात उत्सव की जन्म भूमि। जिसकी उपस्थिति मात्र से जीवन उत्सव बन जाता हैं। परिवार के लिए घर में रसवती होती है, जिसमें गृहिणी रस निर्माण करती है। माता, भार्या, कन्या आदि के रूप में वह जिन उत्तर दायित्वों का संवहन करती है, उन्हीं पर समाज का उत्कर्षापकर्ष अपलम्बित हैं। रामायण वाल्मीकि द्वारा रचित भारतीय संस्कृति की अमूल्य निधि है। रामायण के माध्यम से भारतीय समाज का साक्षात दर्शन होता है।

रामायण में नारियों के सामाजिक पक्ष के साथ वैदिक युग की स्थितियों को भी स्पष्ट किया जाना चाहिए।

नारी की स्थिति :– रामायाण में नारी की स्थिति का अनेक दृष्टियों से अध्ययन किया जा सकता है, क्योंकि कन्या, भार्या, मातृ य जीवन के प्रमुख रूप है अतः समाज में उसकी स्थिति का विश्लेषण भी इन्हीं दृष्टि से करना उचित है। कन्या रूप में जन्म की वहाँ आकांक्षा नहीं की गयी है किन्तु कन्या रूप में जन्म के पश्चात उनसे द्वेष, द्रोह अथवा घृणा भी नहीं की जाती थी। तत्कालीन समय में कन्या – दान पिता के

© Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

लिए परोधर्म (१) एवं स्वधर्म (२) कहा जाता था। कन्या दान से बढ़कर कोई दान नहीं माना जाता था – **'दारप्रदानाद्धि न दानमन्यत्'(३)।**

अतः नारी किसी न किसी रूप में पिता को धार्मिक दृष्टि से अभ्युदय प्राप्त कराती थी। उसका निरादार होने का कोई प्रश्न ही नहीं हो सकता।

नारी शिक्षा :– प्राचीनकाल से स्त्री एवं पुरूष दोनों के उपनयन संस्कार के महत्त्व को स्वीकार किया गया है। उपनयन शब्द का अर्थ है, 'शिक्षार्थी को शिक्षक के समीप ले जाना'। जिन कन्याओं की अभिरूचि अध्ययन के प्रति होती थी, उनका उपनयन वैदिक काल से ही होता था। (४) शिक्षा प्राप्त करने वाली कन्या की दो श्रेणी थी –सद्योवधू और ब्रह्मवादिनी। (५) सद्योवधू एक नियत अवधि तक शिक्षा प्राप्त कर गृहस्थाश्रम में प्रवेश करती थी और ब्रह्मवादिनी स्त्रियाँ आजन्म तक अध्ययन करती थी। सीता, कौशल्या, तारा आदि स्त्रियाँ विभिन्न स्थानों पर पाण्डित्य का उदाहरण प्रस्तुत करती हुई बतायी गयी है। सीता का पति संग एवं पति वियोग में सन्ध्योपसना करना। (६) कौशल्या का श्रीराम के लिए स्वस्त्ययन करना हो या मन्त्र पूर्वक यज्ञाग्नि में आहुति देना, (७) तारा युद्धस्थल में जाते हुए पति बालि के लिए मन्त्र पूर्वक स्वस्त्ययन करती है और मन्त्र विद् कहलाती है –

ततः स्वस्त्ययन कृत्वामन्त्रविद् विजयैषिणी।
स्त्रीभिः प्रविष्टा शोकमोहिता।। (८)

अतः बिना उपनयन संस्कार के न तो इनमें वैदिक मंत्रों के उच्चा रण की योग्यता होती और न अधिकार।

नारी की विविध संस्कार :– भारतीय संस्कृति में संस्कार योजना का प्रमुख स्थान है। रामायण युग में कुछ सीमा तक संस्कारों का विकास हो चुका था किन्तु उनकी संख्या के विषय में विस्तृत उल्लेख नहीं हैं। श्रीराम के जन्मोत्सव पर संस्कारों का उल्लेख है। कन्याओं के संस्कार के विषय में रामायण में मुख्य रूप से विवाह संस्कार का वर्णन मिलता है जहाँ वैदिक विधि अपनायी गया–

विभाण्डकसुतंराजन् ब्राह्मणंवेदपारगम्।
प्रयच्छकन्यां शान्तांवै विधिनासुममाहितः।। (९)

नारी के प्रति समाज का दायित्व :– स्त्री एक परिवारविशेष की नहीं अपितुसम्पूर्णसमाज की अमूल्य निधि है। इसे समुचित आदर एवं प्रतिष्ठा प्रदान करना प्रत्येक समाज का दायित्व है। गीता में कहा गया है कि जिस समाज की स्त्रियाँ दूषित होती है, वह समाज दूषित हो जाता है–

स्त्रीषु दुष्टासु वार्ष्णेय जायते वर्णसंकर। (१०)

रामायण में कन्याओं को स्वस्थ एवं सुखी देखने की इच्छा से उसकी शिक्षा दिक्षा की समुचित व्यवस्था की जाती थी। उसका प्रेम – पूर्वक पालन –पोषण किया जाता था–

दत्ता चास्मीष्टवद्देव्यै ज्येष्ठायै पुण्यकर्मणे।
तथा सम्भाविता चास्मि स्निग्धया मातृसौहदात्।। (११)

सीता, वेदवती, स्वयंप्रथा एवं अहल्या के माता पिता ने तत्कालीन शिक्षण पद्धति के अनुरूप उन्हें शिक्षा दी। माता पिता, भ्राता कन्याओं के प्रति जिस कर्त्तव्य का निष्ठा से पालन करते थ वह है उनका विवाह। राजा जनक ने सीता के लिए श्रीराम जैसा धनूर्विद पराक्रमी और तेजस्वी वर के लिए कई प्रयत्न किये–

तेषां वीर्यवतां वीर्यमल्यं ज्ञात्वा महामुने।
प्रत्याख्याता तृपतयस्तन्निबोध तपोधन।। (१२)

सामरिक कार्यो में महिलाओं की सहभागिता :– **आत्मा हि दारा सर्वेषां दारात्यंग्र तर्तिनाम।**
आत्मेवमिति रामस्य पालिभिष्यति मेदोनाम।। (१३)

रामायण में स्त्रियोंको शासन व्यवस्था का भी अधिकार प्राप्त था। वनवास के समय सीता को साम्राज्य भार सोपने की बात इसका है उदाहरण अर्थात् राम के वनगमन के समय सीता अयोध्या की शासिका होगी। मन्दोदरी एक अन्य उदाहरण है, जो रावण की मंत्रणा में सहायिका का कार्य करती थी।

इसके साथ वैदिक कर्म स्त्रियों बिना अधुरे माने जाते रहे है। यज्ञादि के समय पत्नि की उपस्थिति अनिवार्य थी।

निष्कर्ष :– साधारण तया सभी स्त्रियों को रामायण में समुचित आदर, सम्मान प्रदान किया जाता था। माता का स्थान तत्काल समय में सर्वाधिक प्रतिष्ठित था। माता को किसी भी प्रकार की शारीरिक एवं मानसिक क्षति पहचाना निन्दित एवं याज्य कर्म था। इस प्रकार रामायण में स्त्री परिवार एवं समाज में यथेष्ठ प्रतिष्ठा प्राप्त करती थी। उनके प्रति आदर सूचक सम्बेधनों का प्रयोग किया जाता था। आधुनिक समय में नारी के इस सम्मान की अत्यन्त आवश्यकता हैं। नारी का सम्मान किसी भी काल युग में कम नही हो सकता। यह सत्य है। आधुनिक युग में जहाँ परिवार के दायित्व की भावना अपनी महत्त्वकांक्षा के आगे एक बोझ जैसी प्रतीत हो रही है। सिमटते हुए इस पारिवारिक मर्यादा का परिणाम हम अपने आने वाली पीढियों की मानसिकता में स्पष्ट रूप से देख सकते है। परिवारों में ये असंतुलन न केवल भारत की किन्तु विश्व की एक महान समस्या है। वर्तमान परिदृश्य में भी जीवन की उन्नति में नारी की अहम् भूमिका है क्योंकि नारी जन्मदात्री है। जिस तरह एक एक कोशिका मिलकर जीवन का निर्माण करती है, वैसे ही परिवार की भी अन्य छोटी – छोटी इकाईयाँ मिलकर समाज का निर्माण करती है किन्तु इन सभी इकाईयों की ऊर्जा का स्रोत एवं परिवार की केन्द्र बिन्दु नारी होती है।

संन्दर्भ

(१) वा.रा. १. व ७२. १५
(२) वा. रा. १. ७३. १२
(३) वा. रा. ४. २४. ३८
(४) डा. रामजीउपाध्याय, प्राचीनभारतीय साहित्य की सांस्कृतिकभूमिका प्र. १२४
(५) रामायण – 2/16/9
(६) वा. रा. 2/87/19
(७) वा. रा. 2/20/15
(८) वा. रा. 4/16/12
(९) वा. रा. 1/9/13
(१०) श्रीमदभगवद्गीता– 1.41
(११) वा. रा. 2/118/33
(१२) वा. रा. 9/66/19
(१३) वा. रा. 2/17/24